पी–एच०डी० साक्षात्कार हेतु शोध प्रारूप

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार

–ःशोध शीर्षक का नामः–

वैवाहिक समायोजन पर चिन्ता, संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन

2023

अभ्यर्थी का नाम
MEENA KUMARI

Dr. Binay Kumar
शोध निदेशक का हस्ताक्षर

पी०ए०टी०– 2021-22

क्रमांक–

विषय–मनोविज्ञान

Scanned with OKEN Scanner

शोध का शीर्षक :

"वैवाहिक समायोजन पर चिन्ता, संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन।"

शोध समस्या पर कथन :

वैवाहिक समायोजन अति प्राचीन समय से हीं मानव–जीवन के लिये महत्वपूर्ण मुद्दा रहा है। परिवार के स्थायित्व एवं पति–पत्नी के बीच एक बुनियाद के रूप में वैवाहिक समायोजन कार्यशील रहता है। साथ हीं, इस संदर्भ में अनेक शोधार्थियों द्वारा शोध कार्य किया गया है और सकारात्मक परामर्शन प्रस्तुत भी किया गया है, लेकिन समय बीतने के साथ–साथ एवं वर्तमान समय में जहाँ पारिवारिक विकेन्द्रीकरण हुआ है, वहीं वैवाहिक समायोजन की प्रासंगिकता अधिक बढ़ी हुई प्रतीत होती है। मनावैज्ञानिक दृष्टि से भी वैवाहिक समायोजन मनुष्य के लिये अधिक प्रासंगिक बन गई है। इसी चिन्तन के साथ शोधार्थी द्वारा "वैवाहिक समायोजन पर चिन्ता, संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन" नामक शीर्षक पर शोध कार्य करने का निर्णय लिया गया है।

परिचय :

शादी के बाद पति एवं पत्नी एक दूसरे के पूरक होते हैं। पति–पत्नी के बीच आपसी तालमेल से ही वैवाहिक जीवन सफल होता है, और परिवार रूपी गाड़ी गतिशील रहती है।

वैवाहिक समायोजन का तात्पर्य वैसे समायोजन से होता है, जिसका संबंध वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन से होता है। वैवाहिक समायोजन में पति–पत्नी को एक दूसरे की भावनाओं के अनुरूप कार्य करना पड़ता है और दोनों को एक–दूसरे के प्रति त्याग, सहयोग एवं सुविधा का ध्यान रखना होता है।

अनेक शोध अध्ययनों के आधार पर स्पष्ट किया गया है, कि वैवाहिक जीवन में प्रेम, सहानुभूति, विश्वास तथा सहयोग की आवश्यकता होती है और पति–पत्नी दोनों अपना–अपना कर्त्तव्य समझकर उसका पालन करते हैं।

चिन्ता वस्तुतः एक दुःखद भावनात्मक स्थिति होती है। जिसके कारण व्यक्ति एक प्रकार के अनजाने भय से ग्रसित रहता है। चिन्ता व्यक्ति को भविष्य में आने या होने वाली किसी भयावह समस्या के प्रति चेतावनी देने वाला संकेत होता है। हम सभी दिन– प्रतिदिन कुछ–न–कुछ अलग–अलग तरीके से चिंतित रहते हैं। अनेक शोध अध्ययनों के आधार पर बताया गया है, कि कुछ लोग छोटी समस्याओं

Scanned with OKEN Scanner

से अधिक चिंतित हो जाते हैं, जबकि कुछ ऐसे लोग होते हैं, जो बड़ी समस्या को भी सहज रूप में लेते हैं और विवेकपूर्ण तरीके से समाधान करते हैं।

चिन्ता एवं वैवाहिक समायोजन के बीच भी अनेक शोध अध्ययनें हो चुकी है। इस संबंध में प्राप्त परिणाम में पाया गया है कि, कि अत्यधिक चिन्ता की स्थिति व्यक्तियों के वैवाहिक जीवन को प्रभावित करती है। साथ ही, चिन्ता अवसाद की स्थिति को उत्पन्न करती है और यह वैवाहिक समायोजन के साथ–साथ पारिवारिक विघटन का कारण बनती है।

संवेगात्मक बुद्धि एक विशेष प्रकार का मानवीय गुण होता है, जिसके आधार पर अन्य व्यक्ति की मनःस्थिति को समझा जा सकता है एवं दूसरे व्यक्ति के प्रति सहानुभूति प्रकट करने के साथ–साथ भावनात्मक नियंत्रण भी किया जाता है।

संवेगात्मक बुद्धि द्वारा व्यक्ति अपने आचरण, बातचीत करने के ढंग और संबंधों को मजबूत करने में सफलता प्राप्त कर सकता है। किसी व्यक्ति को उनके स्वयं के तथा अपने कार्य क्षेत्र के वातावरण के बीच अंतःसंबंधों को विकसित करने में भावनात्मक बुद्धि की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

विभिन्न शोधों के निष्कर्षों के आधार पर बताया गया है कि, वैवाहिक समायोजन को बेहतर बनाने में संवेगात्मक बुंद्धि महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इसी तथ्य के आधार पर प्रस्तावित इस शोध में संवेगात्मक बुद्धि को स्वतंत्र चर के रूप में शामिल किया गया है।

व्यक्तित्व व्यक्ति के अंदर उन मनोदैहिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है, जो पर्यावरण के प्रति उसके समायोजन को प्रभावित करते हैं। वारेन ने व्यक्तित्व के संबंध में स्वरूपात्मक अवधारणा व्यक्त करते हुए कहा हैं कि व्यक्तित्व व्यक्ति के सम्पूर्ण संज्ञानात्मक, समन्वित संगठन है, जो दूसरों से केन्द्रीय विभाजक के रूप में प्रकट करता है। इसके अतिरिक्त व्यक्तित्व को व्यक्ति के व्यवहार करने के तरीके, अभिरूचियों, अभियोग्यता व अभिवृति का एक विशेष योग है।

विभिन्न शोधों के आधार पर यह कहा गया है कि व्यक्त्वि की विभिन्नता संबंधी कारक वैवाहिक समायोजन को प्रभावित करता है एवं व्यक्तित्व की भूमिका वैवाहिक समायोजन में महत्वपूर्ण है। अतः इस विचारधारा के आधार पर शोधार्थी द्वारा व्यक्तित्व को भी प्रस्तावित इस शोध में स्वतंत्र चर के रूप में सम्मिलित किया गया है।

पूर्व के अध्ययनों की समीक्षा :

प्रस्तावित इस ोध कार्य में आवश्यक दिशा प्राप्त करने एवं संपादित

फ्रेंजजोई इत्यादि (1985) से स्वजागरूकता एवं वैवाहिक सफलता के बीच संबंधात्मक अध्ययन किया है और पाया है, कि स्वजागरूकता एवं वैवाहिक सफलता के बीच सकारात्मक सह–संबंध पाया जाता है।

फिटनेश (2001) ने अपने अध्ययन के आधार पर पाया है, कि वैवाहिक जीवन में संवेग, प्रत्यक्षीकरण एवं संवेग की समझ एवं प्रबंधन एक मुख्य कारक होता है। साथ ही, उन्होंने वैवाहिक समायोजन में इन कारकों का सकारात्मक प्रभाव पाया है।

शुटे इत्यादि (2001) ने वैवाहिक संतुष्टि और सांवेगिक बुद्धि के बीच शोधात्मक अध्ययन किया है और पाया है, कि सांवेगिक बुद्धि और वैवाहिक संतुष्टि के बीच सकरात्मक सह–संबंध पाया जाता है।

ब्रिकर (2005) ने अपने अध्ययन में पाया है कि संवेगात्मक बुद्धि एवं वैवाहिक संतुष्टि के साथ सार्थक रूप से सह संबंधित होता है। उन्होंने अपने अध्ययन परिणाम में यह भी पाया है, कि सफल दाम्पत्य जीवन में अन्तर्वैयक्तिक कुशलता का सकारात्मक हाथ होता है।

माईकेल (2005) ने दाम्पत्य समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि से संबंधित अध्ययन किया है और पाया है, कि दाम्पत्य समायोजन एवं सांवेगिक बुद्धि के बीच सकारात्मक सह–संबंध पाया जाता है।

दुबे, (2009) ने वैवाहिक समायोजन में शिक्षा संबंधी कारक का अध्ययन किया है और अपने अध्ययन परिणाम में पाया है, कि शिक्षित महिलाओं एवं अशिक्षित महिलाओं के वैवाहिक समायोजन में सार्थक अंतर होता है।

जोशी एवं थीनगुजाम (2009) ने वैवाहिक समायोजन, व्यक्तित्व प्रतिमान, संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक अभिरूचि का अध्ययन किया है और अध्ययन परिणाम में पाया है, कि वैवाहिक समायोजन में व्यक्तित्व प्रतिमान संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक अभिरूचि के साथ सह–संबंधित होता है।

शोध का उद्देश्य :

प्रस्तावित इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य वैवाहिक समायोजन पर समायोजन पर चिन्ता, संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन करना है।

Scanned with OKEN Scanner

परिकल्पना :

प्रस्तावित इस शोध कार्य को मानक स्तर पर करने के लिये उपयुक्त परिकल्पनाओं का निर्माण शोध कार्य के क्रम में किया जायेगा फिर भी प्रतिदर्श के रूप में कुछ मुख्य परिकल्पनाएँ निम्नांकित है :

(i) महिलाओं के वैवाहिक समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि का सकारात्मक प्रभाव होगा,

(ii) उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले उत्तरदाताओं का वैवाहिक जीवन निम्न संवेगात्मक बुद्धिवाले उत्तरदाताओं की अपेक्षा बेहतर होगा,

(iii) अधिक चिन्तित रहने वाले महिलाओं का वैवाहिक समायोजन बेहतर नहीं होगा, जबकि कम चिन्तित रहने वाले महिलाओं का वैवाहिक समायोजन बेहतर होगा,

(iv) ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के वैवाहिक समायोजन में सार्थक अंतर होगा,

(v) एकल परिवार एवं संयुक्त परिवार के महिलाओं का वैवाहिक समायोजन भिन्न होगा।

(vi) वैवाहिक समायोजन पर व्यक्तित्व कारकों का भिन्नात्मक प्रभाव होगा।

प्रविधि :

(i) प्रतिदर्श :

प्रस्तावित इस गोध कार्य हेतु कुल 400 महिलाओं का उद्देशात्मक चयन पद्धति के आधार पर प्रतिदर्श के रूप में चयन किया जायेगा। प्रतिदर्शों की उम्र 24 वर्ष से लेकर 40 वर्ष (औसत उम्र 32 वर्ष) होगी।

(iii) अध्ययन क्षेत्र :

प्रस्तावित इस शोध कार्य के लिये अध्ययन क्षेत्र के रूप में सम्पूर्ण समस्तीपुर (ग्रामीण एवं शहरी) जिला होगा,

(ii) मापनियाँ :

प्रस्तावित इस शोध कार्य में निम्नांकित शोध मापनियों का प्रयोग किया जायेगा :

(A) वैवाहिक समायोजन मापनी :

प्रतिदर्शों के वैवाहिक समायोजन की माप के लिये पी० कुमार एवं रहतोगी द्वारा विकसित वैवाहिक समायोजन मापनी का प्रयोग किया जायेगा। यह मापनी मनोवैज्ञानिक शोध के लिये एक विश्वसनीय, वास्तविक एवं उपयुक्त मापनी है।

Scanned with OKEN Scanner

(B) संवेगात्मक बुद्धि मापनी :

प्रतिदर्शों के संवेगात्मक बुद्धि स्तर की माप के लिये मंगल एवं मंगल द्वारा विकसित संवेगात्मक बुद्धि मापनी का प्रयोग किया जायेगा। यह मापनी भी मनोवैज्ञानिक शोध में उत्तरदाताओं में संवेगात्मक बुद्धि के स्तर की माप हेतु एक विश्वसनीय, वास्तविक एवं उपयुक्त मापनी है।

(C) चिन्ता मापनी :

उत्तरदाताओं के चिन्ता स्तर की माप के लिये सिन्हा द्वारा विकसित चिन्ता मापनी का प्रयोग किया जायेगा। वर्तमान संदर्भ में व्यक्तियों में चिन्ता स्तर की माप के लिये यह मापनी भी उपयुक्त वास्तविक एवं लोकप्रिय मापनी है।

(D) व्यक्तित्व मापनी :

उत्तरदाताओं के व्यक्तित्व स्तर की जानकारी हेतु सिंह एवं कुमार द्वारा विकसित व्यक्तित्व मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

(E) व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र :

प्रतिदर्शों के संबंध में व्यक्तिगत जानकारी जैसे, नाम, उम्र, यौन, ग्रामीण–शहरी निवास, शिक्षा, परिवार के सदस्यों की संख्या एवं उनकी शैक्षिक स्थिति, परिवार का प्रकार, वित्तीय स्थिति, व्यवसाय, परिवार के सदस्यों की उत्तरदाताओं के प्रति मनोवृत्ति इत्यादि की जानकारी के लिये स्वयं शोधार्थी द्वारा विकसित व्यक्तिगत सूचना–प्रपत्र का उपयोग किया जायेगा।

प्रदत्तों का संकलन :

प्रस्तावित इस शोध कार्य में प्रदत्त संग्रह के लिये शोधार्थी द्वारा चयनित मापनियों की सहायता से अध्ययन क्षेत्र का भ्रमण करके उत्तरदाताओं से सम्पर्क के पश्चात् प्रदत्तों का संकलन किया जायेगा।

प्रदत्तों का विश्लेषण :

शोधार्थी द्वारा संकलित किये गये प्रदत्तों का उचित सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा वर्तमान समसामयिक भारतीय संदर्भ में परिणाम तैयार किया जायेगा।

कार्य योजना :

प्रस्तावित इस शोध कार्य को शोध प्रबंध के रूप में निम्न प्रकार तैयार किया जायेगा :

Scanned with OKEN Scanner

अध्याय–01	:	परिचय
अध्याय–02	:	पूर्व के अध्ययनों की समीक्षा
अध्याय–03	:	उद्देश्य एवं परिकल्पना
अध्याय–04	:	प्रविधि
अध्याय–05	:	परिणाम
अध्याय–06		व्याख्या एवं निष्कर्ष
अध्याय–07	:	सारांश

सबसे अंत में, संदर्भ–सूची एवं परिशिष्ट दिया जायेगा।

संदर्भ सूची :

अग्रवाल, एस०एंड दीक्षित, एस० (2000) : मैनुअल ऑफ स्कूल इनवायरनमेंट स्केल, आगरा साइकॉलॉजिकल रिसर्च सेल, आगरा

आलम, एम० (2013) : इमोशनल इंटेलिजेन्स एंड क्रियोटिवीटी ऑफ स्कूल स्टूडेन्ट्स ऑफ दरभंगा डिस्ट्रिक ऑफ बिहार, जर्नल ऑफ कम्यूनिटि गाईडेंस एंड रिसर्च 30(3)

गर्ग, आर० काउपी, सी० ल्यूको, जे०एंड उर्जनिक डी० (2002) : ए स्ट्रक्चरल मॉडेल ऑफ एजुकेशनल एसपिरिशन्स, जर्नल ऑफ कैरिअर डेवलपमेंट, 29(2) : 87–108

परमशिवम्, पी० एवं मणि, एस० (2013) : इनफ्लूऐंस ऑफ जेन्डर एंड मैनेजमेंट ऑफ स्कूल ऑन स्कूल इनवायरनमेंट ऑफ हाइअर सेकेन्ड्री स्टूडेन्ट्स, ग्लोबल जर्नल ऑफ रिसर्च एनेलाईसिस 2(11), 227–236

रश्मि, के० (2013) : बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन पर उपलब्धि प्रेरक एवं समायोजन के प्रभाव का अध्ययन, जर्नल ऑफ साइकॉलोजी एंड काउन्सेलिंग, 2(5) 118–125

शमशाद, एम० एंड जहाँ, के० (1987) : मैनुअल ऑफ एडजेस्टमेंट इन्वेंट्री, आगरा साइकॉलॉजिकल रिसर्च सेल, आगरा।

शर्मा (2013) : स्टडी ऑन इमोशनल इंटेलिजेन्स एंड सेल्फ कॉन्सेप्ट ऑफ बी०एड० स्टूडेन्ट्स, जर्नल ऑफ एजुकेशनल एंड साइकोलॉजिक रिसर्च 3(2)

शोध पर्यवेक्षक का हस्ताक्षर | **शोधकर्त्ता का हस्ताक्षर**

Scanned with OKEN Scanner